

श्रीमद् आचार्य नेमिचन्द्र  
सिद्धान्तचक्रवर्ति विरचित

# लब्धिसार

प्रथमोपशम सम्यक्त्व  
अधिकार



Presentation Developed By: Smt Sarika Vikas Chhabra

ताए अधापवत्तद्धाए संखेज्जभागमेत्तं तु ।  
अणुकट्टीए अद्धा, णिव्वग्गणकंडयं तं तु ॥43॥

- अन्वयार्थः- (ताए अधापवत्तद्धाए) उस अधःप्रवृत्तकरण काल का (संखेज्जभागमेत्तं तु) संख्यातवाँ भाग मात्र (अणुकट्टीए अद्धा) अनुकृष्टि का आयाम है ।
- (तं तु णिव्वग्गणकंडयं) वही निर्वर्गणाकाण्डक का प्रमाण है ॥43॥

अनुकृष्टि

अनुकृष्टि  
गच्छ/आयाम

अनुकृष्टि याने प्रत्येक समय के परिणाम-  
खंड

एक समय के परिणामों के नाना खंडों की संख्या  
अनुकृष्टि का गच्छ है।  
अधःप्रवृत्त करण काल  

---

संख्यात

ऊपर-नीचे के समयों के परिणामों में समानता दिखाने  
के लिए अनुकृष्टि बनाई जाती है ।

## अनुकृष्टि

- प्रत्येक समय के परिणाम खंड

## अध्दा

- काल = अनुकृष्टि के खंडों की संख्या

## निर्वर्गणाकांडक

- जितना अनुकृष्टि का आयाम है, उतना ही निर्वर्गणाकांडक का प्रमाण है ।
- प्रथमसमयवर्ती जीवों के परिणाम उपरितन समयवर्ती जीवों के परिणामों से जब तक समान पाये जाते हैं, तब तक के परिणाम समूह का नाम निर्वर्गणाकांडक है ।

जैसे प्रथम समयवर्ती जीव के परिणाम के सदृश परिणाम चतुर्थ समय तक पाये जा सकते हैं । तो 1 से 4 समय के समूह का नाम निर्वर्गणाकांडक है ।

फिर आगे 5 से 8 समय के समूह का नाम दूसरा निर्वर्गणाकांडक है । ऐसे क्रमशः आगे-आगे के निर्वर्गणाकांडक जानना ।

$$\text{अनुकृष्टि का गच्छ} = \frac{\text{अधःप्रवृत्तकरण का काल}}{\text{संख्यात}}$$

$$= \frac{2222}{2} = 222$$

इतने ही समय प्रमाण उपरितन समयों के परिणामों में समानता रहती है ।

# निर्वर्गणाकाण्डक

अनुकृष्टि खंडों की संख्या या अनुकृष्टि गच्छ वही निर्वर्गणाकाण्डक का प्रमाण है।

वर्गणा अर्थात् समयों की समानता,

निर् याने उससे रहित ऊपर-ऊपर के समयों के परिणाम-खंड,

उनका कांडक अर्थात् पर्व उसको निर्वर्गणाकांडक कहते हैं।

वे अधःप्रवृत्तकरण काल में संख्यात हजार होते हैं ।

पडिसमयगपरिणामा, णिव्वग्गणसमयमेत्तखंडकया।  
अहियकमा हु विसेसे, मुहुत्तअंतो हु पडिभागो ॥44॥

- अन्वयार्थः- (पडिसमयगपरिणामा) प्रत्येक समय के परिणामों के (णिव्वग्गणसमयमेत्तखंडकया) निर्वर्गणा काण्डक के जितने क्रमशः खंड होते हैं (अहियकमा हु) वे खण्ड अधिक क्रम वाले हैं ।
- (विसेसे पडिभागो मुहुत्तअंतो हु) अधिक प्रमाण लाने के लिए प्रतिभागहार अंतर्मुहूर्त है ॥44॥

## अनुकृष्टि का चय

जो प्रत्येक समय संबंधी तिर्यग् खंड बनाये जाते हैं, वे क्रमशः समान वृद्धि लिए होते हैं ।

इस समान वृद्धि को ही अनुकृष्टि का चय कहते हैं ।

$$\frac{\text{ऊर्ध्व चय}}{\text{अनुकृष्टि गच्छ}} = \text{अनुकृष्टि का चय}$$

# अनुकृष्टि का सर्वधन

जो प्रत्येक समय के परिणामों की संख्या है, वही यहाँ पर सर्वधन का प्रमाण है ।

जैसे अंक संदृष्टि में प्रथम समय के परिणामों की संख्या 162 है, तो प्रथम समय संबंधी खंड लाने के लिए 162 ही सर्वधन का प्रमाण है ।

इसी सर्वधन के आधार से प्रत्येक खंड में परिणाम दिये जायेंगे ।



# अनुकृष्टि रचना

अनुकृष्टि गच्छ

$$= \frac{\text{ऊर्ध्व गच्छ}}{\text{संख्यात}} = \frac{16}{4} = 4$$

अनुकृष्टि चय

$$= \frac{\text{ऊर्ध्व चय}}{\text{अनुकृष्टि गच्छ}} = \frac{4}{4} = 1$$

प्रथम समय संबंधी सर्वधन = 162, गच्छ = 4, चय = 1

चयधन

$$= \frac{4 - 1}{2} \times 1 \times 4 = 3 \times 1 \times 2 = 6$$

आदिधन

$$= 162 - 6 = 156$$

आदि

$$= \frac{156}{4} = 39$$

❁ प्रथम खंड में एक-एक अनुकृष्टि चय जोड़ने पर शेष खंडों का प्रमाण आता है ।

❁ तो प्रथम समय संबंधी रचना ऐसे बनेगी:

162 →	39	40	41	42
-------	----	----	----	----

❁ द्वितीय समय संबंधी रचना इस प्रकार बनेगी:

166 →	40	41	42	43
-------	----	----	----	----

❁ ऐसे ही सारे समयों में बनाइये ।

16	222	54	55	56	57
15	218	53	54	55	56
14	214	52	53	54	55
13	210	51	52	53	54
12	206	50	51	52	53
11	202	49	50	51	52
10	198	48	49	50	51
9	194	47	48	49	50
8	190	46	47	48	49
7	186	45	46	47	48
6	182	44	45	46	47
5	178	43	44	45	46
4	174	42	43	44	45
3	170	41	42	43	44
2	166	40	41	42	43
1	162	39	40	41	42
समय	परिणामों की संख्या	अनुकृष्टि के खंड			

अधःप्रवृत्त  
करण के  
सर्व  
समयों  
की  
अनुकृष्टि  
रचना

# अनुकृष्टि रचना

पंचम समय



असंख्यात लोक प्रमाण परिणाम

चतुर्थ समय



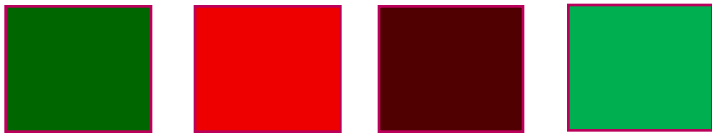
असंख्यात लोक प्रमाण परिणाम

तृतीय समय



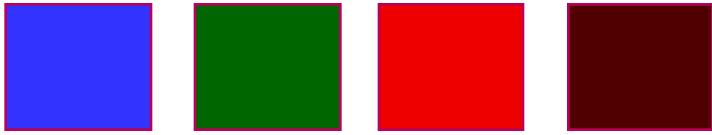
असंख्यात लोक प्रमाण परिणाम

द्वितीय समय



असंख्यात लोक प्रमाण परिणाम

प्रथम समय



असंख्यात लोक प्रमाण परिणाम

काल - अंतर्मुहूर्त

# प्रत्येक खंड के परिणाम की विशेषता

जघन्य, मध्यम और उत्कृष्ट भेदों से भिन्न प्रतिनियत खंड के विशुद्ध परिणामों के भेद एक-एक खंड में असंख्यात लोकप्रमाण हैं।

प्रत्येक समय के परिणाम उत्तरोत्तर सदृश वृद्धि को लिए हुए विशेष अधिक हैं।

प्रत्येक खंड के परिणामों में असंख्यात लोकमात्र षट्स्थान होते हैं।

अनुकृष्टि चय में भी असंख्यात लोकमात्र षट्स्थान होते हैं।

# अधःप्रवृत्त करण के परिणाम

1..2..3....39...40.....79..80.....120..121.....162.....205.....249.....294.....

प्रथम समय परिणाम

40

205

द्वितीय समय परिणाम

80

249

तृतीय समय परिणाम

121

294

चतुर्थ समय परिणाम

# अधःप्रवृत्त करण के समयों की अनुकृष्टि रचना

4<sup>th</sup> समय के परिणाम

$$121 \ 122 \ \dots\dots 294 = 174$$

3<sup>rd</sup> समय के परिणाम

$$80 \ 81 \ \dots\dots\dots 249 = 170$$

2<sup>nd</sup> समय के परिणाम

$$40 \ 41 \ \dots\dots\dots 205 = 166$$

1<sup>st</sup> समय के परिणाम

$$1 \ 2 \ 3 \ \dots\dots 162 = 162$$

# अनुकृष्टि रचना

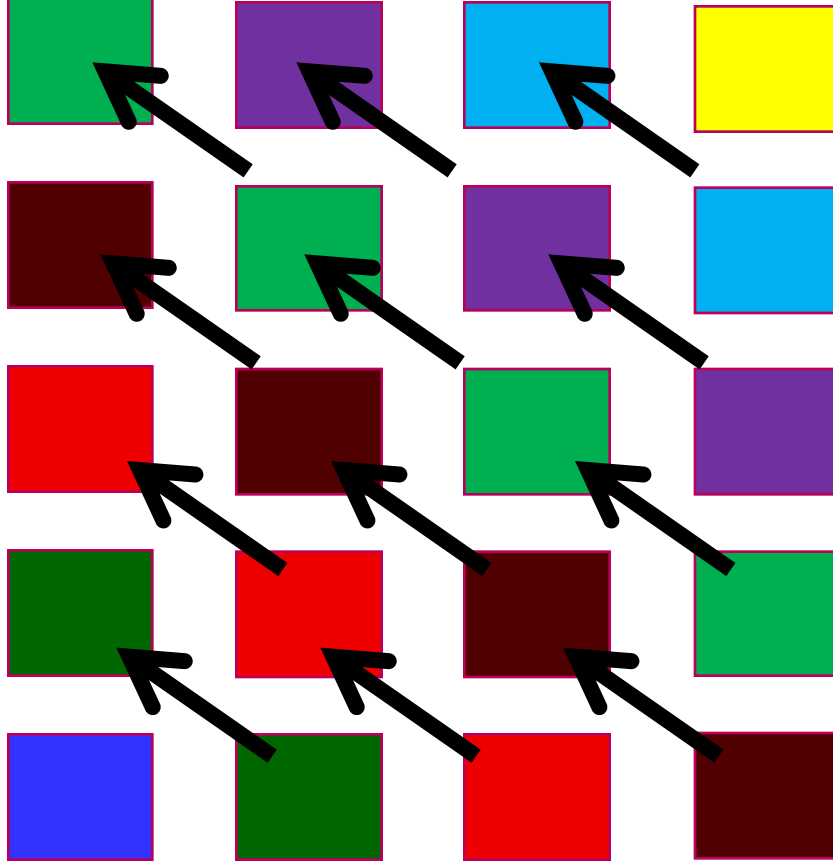
पंचम समय

चतुर्थ समय

तृतीय समय

द्वितीय समय

प्रथम समय



नीचे के समय में स्थित  
परिणाम-पुंज का ऊपर के  
समय में पाया जाना

काल - अंतर्मुहूर्त



<b>4</b>	174	42	43	44	45
		(121-162)	(163-205)	(206-249)	(250-294)
<b>3</b>	170	41	42	43	44
		(80-120)	(121-162)	(163-205)	(206-249)
<b>2</b>	166	40	41	42	43
		(40-79)	(80-120)	(121-162)	(163-205)
<b>1</b>	162	39	40	41	42
		(1-39)	(40-79)	(80-120)	(121-162)
<b>समय</b>	<b>परिणामों की संख्या</b>	<b>अनुकृष्टि के खंड</b>			

पडिखंडगपरिणामा, पत्तेयमसंखलोगमेत्ता हु ।  
लोयाणमसंखेज्जा, छट्ठाणाणि वि विसेसे वि ॥45॥

- अन्वयार्थः- (पडिखंडगपरिणामा) प्रतिनियत खंड के परिणाम (पत्तेयं) प्रत्येक खण्ड में (असंखलोगमेत्ता हु) असंख्यात लोकप्रमाण हैं।
- (छट्ठाणाणि वि) प्रत्येक खंड में षट्स्थानपतित वृद्धि-स्थान भी (लोयाणमसंखेज्जा) असंख्यात लोकप्रमाण होते हैं ।
- (विसेसे वि) अनुकृष्टि चय में भी असंख्यात लोकप्रमाण षट्स्थान होते हैं अर्थात् चय का प्रमाण इतना बड़ा होता है ॥45॥

# अनुकृष्टि के खंड

८...३ ८...३ ८...३

प्रत्येक खंड के परिणाम असंख्यात लोक प्रमाण है ।

प्रत्येक खंड में असंख्यात लोक प्रमाण षट्स्थानपतित वृद्धि-हानि स्थान होते हैं ।

अनुकृष्टि चय में भी असंख्यात लोक प्रमाण षट्स्थान पाये जाते हैं ।

अधःप्रवृत्त  
करण  
परिणामों  
के कुल  
कितने  
षट्स्थान  
होंगे?

$\binom{S+1}{0}^5$  प्रमाण स्थानों में 1 षट्स्थान होता है ।

तो  $\equiv 0$  प्रमाण परिणामों से कितने षट्स्थान होंगे ?

$$\frac{1}{\binom{S+1}{0}^5} \times \equiv 0 \Rightarrow \equiv 0 \Rightarrow \equiv 0$$

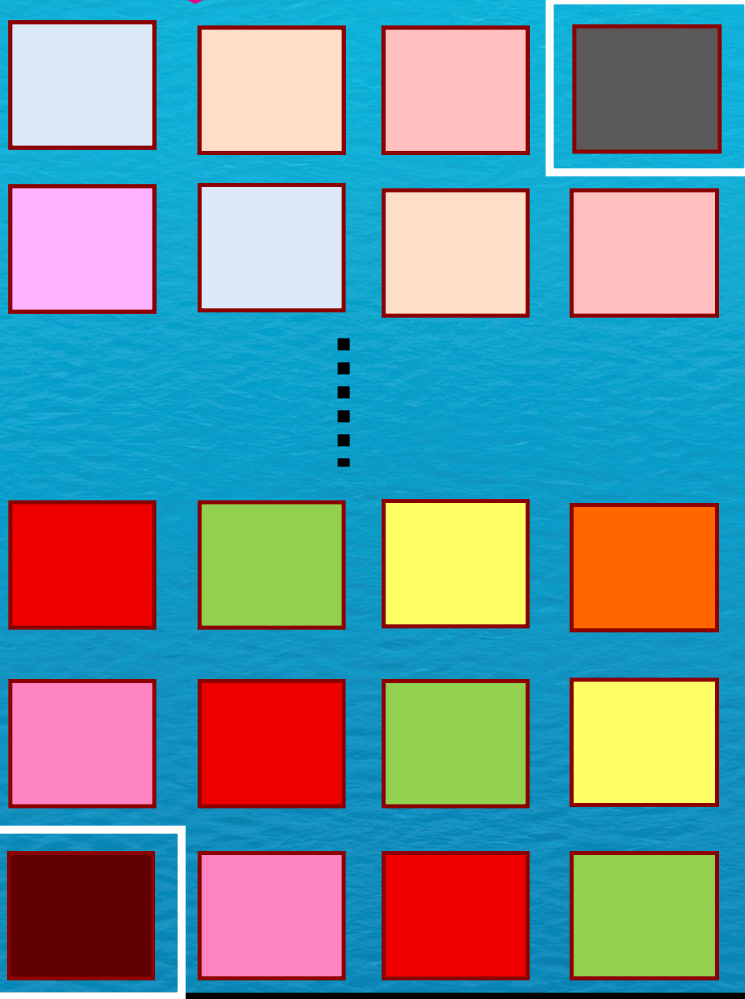
याने अधःप्रवृत्तकरण परिणामों के  $\equiv 0$  (असंख्यात लोक प्रमाण) षट्स्थान बनते हैं ।

पढमे चरिमे समये, पढमं चरिमं च खंडमसरित्थं ।  
सेसा सरिसा सव्वे, अट्टुव्वंकादिअंतगया ॥46॥

- अन्वयार्थ :- (पढमे समये) प्रथम समय का (पढमं खंड) प्रथम खंड (च) और (चरिमे समये) अंतिम समय का (चरिमं खंड) अंतिम खंड (असरित्थं) असमान है अर्थात् दूसरे किसी भी खंड के समान नहीं है । (सेसा सव्वे) शेष सर्व खंड (सरिसा) एक दूसरे से सदृश हैं।
- (अट्टुव्वंकादिअंतगया) सभी खण्डों का आदि अष्टांक और अन्त उर्वक है ॥46॥

# सर्वथा असमान खंड

चरम समय  
द्विचरम समय  
⋮  
तृतीय समय  
द्वितीय समय  
प्रथम समय



1) प्रथम समय का प्रथम खण्ड ।  
(दृष्टांत में 39 परिणाम वाला खंड)

2) अंतिम समय का अंतिम खण्ड ।  
(दृष्टांत में 57 परिणाम वाला खंड)

शेष सारे खंड एक दूसरे के सदृश हैं ।

काल - अंतर्मुहूर्त

# इन सारे खंडों में

८.....३

८.....३

८.....३

८.....३

प्रथम परिणाम अष्टांकरूप है । याने अनंतगुणवृद्धिरूप है ।

एक षट्स्थान का प्रारंभ अष्टांक से होता है । अतः प्रत्येक खंड नवीन षट्स्थान से प्रारंभ हो रहा है – यह ज्ञात होता है ।

प्रत्येक खंड का अंतिम परिणाम उर्वंकरूप है । याने अनंतभागवृद्धि रूप है ।

प्रत्येक षट्स्थान का अंत उर्वंक पर होता है । अतः प्रत्येक खंड का समापन षट्स्थान के समापन के साथ होता है ।

चरिमे सव्वे खंडा, दुचरिमसमओ त्ति अवरखंडाए ।  
असरिसखंडाणोली, अधापवत्तम्हि करणम्हि ॥47॥

- अन्वयार्थः- (अधापवत्तम्हि करणम्हि) अधःप्रवृत्तकरण में (चरिमे) अंतिम समय संबंधी (सव्वे खंडा) सभी खंड और (दुचरिमसमओ त्ति) द्विचरम समयपर्यंत के (अवरखंडाए) सर्व जघन्य खण्ड (असरिसखंडाणोली) यह असमान खंडों की पंक्ति है ॥47॥





# अपुनरुक्त परिणामपुंज

अंतिम समय के सारे खंड + प्रथम  
समय से द्विचरम समय के प्रथम खंड  
= अपुनरुक्त परिणामपुंज

शेष सारे खंड इन्हीं परिणामों की  
पुनरुक्ति है ।

54

55

56

57

53

52

51

50

49

48

47

46

45

44

43

42

41

40

39

यह अंकुशाकार रचना  
कहलाती है ।

ये 912 परिणामपुंज  
अपुनरुक्त है ।

शेष  $3072 - 912 =$   
 $2160$  पुनरुक्त हैं ।

पढमे करणे अवरा, णिव्वग्गणसमयमेत्तगा तत्तो ।  
अहिग्गदिणा वरमवरं, तो वरपंती अणंतगुणियकमा ॥48॥

• अन्वयार्थः- (पढमे करणे) प्रथम अधःप्रवृत्तकरण में (णिव्वग्गणसमयमेत्तगा) निर्वर्गणाकाण्डक समयप्रमाण प्रत्येक समय के (अवरा) जघन्य परिणाम (अणंतगुणियकमा) ऊपर-ऊपर अनंतगुणित क्रम से हैं। (तत्तो) उससे (निर्वर्गणाकाण्डक के अंतिम समय संबंधी जघन्य परिणाम से) (वरमवरं) प्रथम समयसंबंधी उत्कृष्ट परिणाम, उससे द्वितीय निर्वर्गणाकाण्डक के प्रथम समयसंबंधी जघन्य परिणाम – इस प्रकार (अहिग्गदिणा) सर्प की चाल के समान जघन्य से उत्कृष्ट और उससे जघन्य परिणाम अनन्तगुणित क्रम से हैं । (तो) उससे (चरम निर्वर्गणाकाण्डक के प्रथम समय के उत्कृष्ट परिणाम से उसके अंतिम समय पर्यन्त (वरपंती) उत्कृष्ट परिणामों की पंक्ति (अणंतगुणियकमा) अनन्तगुणित क्रम से है ॥48॥

# विशुद्धि की तुलना

44 206...249			
43 163...205			
42 121...162	43 163...205		45 250...294
41 80...120	42 121...162	43 163...205	44 206...249
40 40...79	41 80...120	42 121...162	43 163...205
39 1...39	40 40...79	41 80...120	42 121...162

1लें परिणाम से 40वां परिणाम अनंतगुणा है ।

40वें परिणाम से 80वां परिणाम अनंतगुणा है ।

80वें परिणाम से 121वां परिणाम अनंतगुणा है ।

121वें परिणाम से 162वां परिणाम अनंतगुणा है ।

162वें परिणाम से 163वां परिणाम अनंतगुणा है ।

163वें परिणाम से 205वां परिणाम अनंतगुणा है ।

ऐसे सर्प की गति से आगे प्रत्येक खंड के जघन्य परिणाम से उसी खंड का उत्कृष्ट परिणाम अनंतगुणा है ।

उस खंड के उत्कृष्ट परिणाम से अगले खंड का जघन्य परिणाम अनंत गुणा है ।

निर्वर्गणा कांडक प्रमाण समय तक प्रत्येक समय का जघन्य परिणाम ऊपर-ऊपर अनंतगुणा है ।

प्रथम निर्वर्गणा कांडक के अंतिम समय के प्रथम खंड के जघन्य परिणाम (121) से प्रथम निर्वर्गणा कांडक के प्रथम समय के अंतिम खंड का अंतिम परिणाम (162) अनंतगुणा है ।

उससे द्वितीय निर्वर्गणा कांडक के प्रथम समय के प्रथम खंड का जघन्य परिणाम (163) अनंत गुणा है ।

उससे प्रथम कांडक के द्वितीय समय के अंतिम खंड का अंतिम परिणाम (205) अनंत गुणा है ।

उससे दूसरे कांडक के दूसरे समय के प्रथम खंड का जघन्य परिणाम (206) अनंत गुणा है ।

इस प्रकार जघन्य से उत्कृष्ट, उत्कृष्ट से जघन्य अनंतगुणा है ।


इस प्रकार अंतिम कांडक के अंतिम समय के प्रथम खंड का जघन्य परिणाम (691) पूर्व से अनंतगुणा है ।

उससे अंतिम कांडक के प्रथम समय के अंतिम समय का उत्कृष्ट परिणाम (744) अनंत गुणा है ।

उससे अंतिम कांडक के अंतिम समय के द्वितीय खंड का जघन्य परिणाम (745) अनंत गुणा है।

उससे अंतिम कांडक के द्वितीय समय के अंतिम खंड का उत्कृष्ट परिणाम (799) अनंत गुणा है।

इस क्रम से अंतिम समय के अंतिम खंड के उत्कृष्ट परिणाम तक जानना चाहिए ।



# एक खंड की विशुद्धि की तारतम्यता

प्रत्येक खंड के जघन्य परिणाम से उसी खंड का उत्कृष्ट परिणाम इतना विशुद्धि लिये है –

- अनंत गुणा
- असंख्यात  $\times$  अनंत गुणा
- $\equiv 0$  बार अनंत गुणा याने  $(\text{अनंत})^{\equiv 0}$

एक खंड के उत्कृष्ट परिणाम से अगले खंड का जघन्य परिणाम अनंत गुणा है । वह एक बार ही अनंत गुणा है ।

पढमे करणे पढमा, उड्ढगसेढी य चरिमसमयस्स ।  
तिरियगखंडाणोली, असरित्थाणंतगुणियकमा ॥49॥

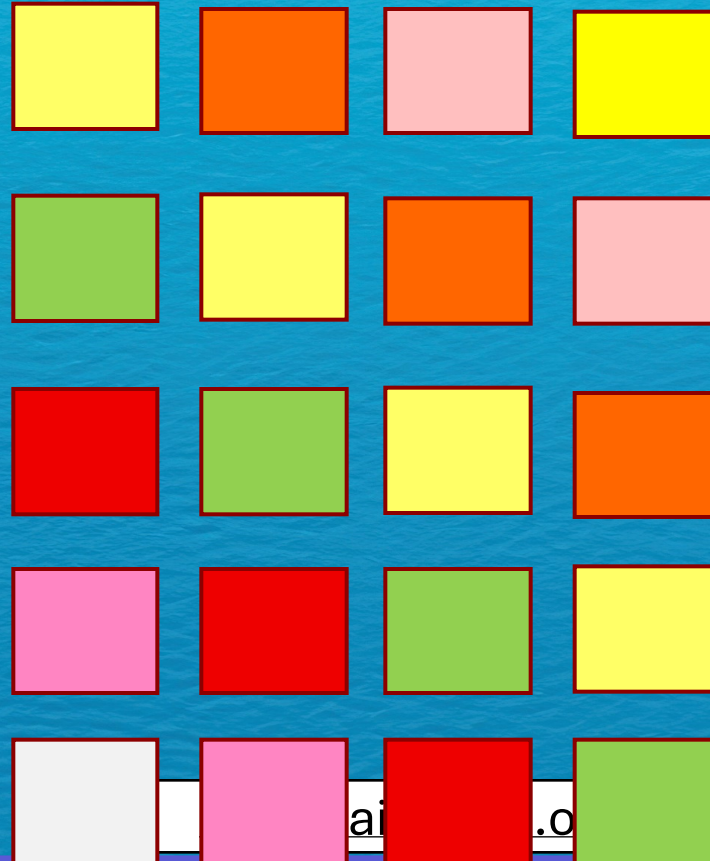
- अन्वयार्थ:- (पढमे करणे) प्रथम अधःप्रवृत्तकरण में (पढमा उड्ढगसेढी) प्रथम ऊर्ध्वपंक्ति (सब समयों के प्रथम खंड की ऊर्ध्व पंक्ति) (य) और (चरिमसमयस्स) अंतिम समय की (तिरियगखंडाणोली) तिर्यक् रूप से स्थित खंडों की पंक्ति (असरित्था) असमान है और (अणंतगुणियकमा) अनन्तगुणितरूप से स्थित है ।

प्रथम समय के सारे खंड

+ द्वितीय समय से अंतिम समय के अंतिम-अंतिम खंड

= अपुनरुक्त खंड

असदृश  
खंड  
निकालने  
की अन्य  
विधि



यह लांगलाकार  
रचना है

57

56

.

.

.

.

43

39

40

41

42



पढमं व विदियकरणं, पडिसमयमसंखलोगपरिणामा ।  
अहियकमा हु विसेसे, मुहुत्तअंतो हु पडिभागो ॥50॥

- अन्वयार्थ :- (पढमं व) प्रथम अधःप्रवृत्तकरण के समान ही (विदियकरणं) दूसरा अपूर्वकरण है।
- यहाँ भी (पडिसमयं) प्रत्येक समय में (अहियकमा) क्रम से अधिक (असंखलोग परिणामा) असंख्यात लोकप्रमाण परिणाम हैं।
- (हु विसेसे) चय का प्रमाण लाने के लिए (मुहुत्तअंतो हु) अंतर्मुहूर्त (पडिभागो) प्रतिभागहार है ॥50॥

# अपूर्वकरण के परिणाम

अपूर्वकरण के परिणामों की संख्या, अधःप्रवृत्तकरण के परिणामों की संख्या से असंख्यात लोक गुणी है ।

अधःप्रवृत्तकरण के परिणाम  $\times$  असंख्यात लोक = अपूर्वकरण के परिणाम

असंख्यात लोक  $\times$  असंख्यात लोक = असंख्यात लोक

$$\equiv 0 \times \equiv 0$$

$$= \equiv 0 \equiv 0$$



## अपूर्वकरण के परिणाम

प्रत्येक समय के परिणाम असंख्यात लोक होते हैं ।

वे प्रत्येक समय के परिणाम सदृश वृद्धि से बढ़ते जाते हैं ।

सदृश वृद्धि (चय) का प्रमाण भी असंख्यात लोक है ।

प्रथम समय के परिणाम में अंतर्मुहूर्त का भाग देने पर चय प्राप्त होता है ।

$$\frac{\text{अपूर्वकरण के प्रथम समय के परिणाम पुंज}}{\text{अंतर्मुहूर्त}} = \text{चय}$$

अंकसंदृष्टि: सर्वधन = 4096, गच्छ = 8, संख्यात = 4

पद	सूत्र	उदाहरण
चय	$\frac{\text{सर्वधन}}{\text{गच्छ}^2 \times \text{संख्यात}}$	$\frac{4096}{8 \times 8 \times 4} = 16$
चयधन	$\frac{\text{गच्छ} - 1}{2} \times \text{चय} \times \text{गच्छ}$	$\frac{8 - 1}{2} \times 16 \times 8$ $= 7 \times 8 \times 8 = 448$
आदिधन	सर्वधन - चयधन	$4096 - 448 = 3648$
आदि	$\frac{\text{आदिधन}}{\text{गच्छ}}$	$\frac{3648}{8} = 456$

8	568 (3529-4096)
7	552 (2977-3528)
6	536 (2441-2976)
5	520 (1921-2440)
4	504 (1417-1920)
3	488 (929-1416)
2	472 (457-928)
1	456 (1-456)
समय	परिणामों की संख्या

# अपूर्वकरण के परिणामों की रचना (अंक संदृष्टि से)

कुल परिणाम = 4096

समय = 8

चय = 16

जम्हा उवरिमभावा, हेट्टिमभावेहिं णत्थि सरिसत्तं ।  
तम्हा विदियं करणं, अपुव्वकरणो त्ति णिद्धिदुं ॥51॥

- अन्वयार्थः- (जम्हा) जिस कारण (उवरिमभावा) ऊपर समयवर्ती परिणामों की (हेट्टिमभावेहिं) नीचे के समयवर्ती परिणामों से (सरिसत्तं) समानता (णत्थि) नहीं है (तम्हा) उस कारण से (विदियं करणं) दूसरे कारण को (अपुव्वकरणो त्ति) अपूर्वकरण ऐसा (णिद्धिदुं) कहा गया है ॥51॥

# अपूर्वकरण

चूंकि उपरितन समयवर्ती जीवों के परिणाम

अधस्तन समयवर्ती जीवों के परिणामों के साथ सदृशता नहीं रखते,

प्रत्येक समय में पूर्ववर्ती परिणाम-पुंजों से अपूर्व-अपूर्व ही परिणाम होते हैं,

इसलिए इस कारण को अपूर्वकरण कहते हैं ।

प्रत्येक समय के उत्कृष्ट परिणाम से अगले समय का जघन्य परिणाम भी अनंत गुणा विशुद्ध होता है ।

अतः पूर्व-उत्तर परिणाम समूह की सदृशता संभव नहीं है ।

# स्वरूप - अपूर्वकरण

भिन्न समयवर्ती जीवों के  
परिणाम

भिन्न ही

एक समयवर्ती जीवों के  
परिणाम

भिन्न भी

समान भी



# अपूर्वकरण

पंचम समय



चतुर्थ समय



तृतीय समय



द्वितीय समय



प्रथम समय



प्रतिसमय अपूर्व-अपूर्व  
परिणाम



काल - अंतर्मुहूर्त

असंख्यात लोक प्रमाण परिणाम

# अपूर्वकरण में अनुकृष्टि क्यों नहीं है?

ऊपर और नीचे के परिणामों में समानता दिखाने के लिए अनुकृष्टि बनाई जाती है ।

अपूर्वकरण में ऊपर और नीचे के परिणामों में समानता है ही नहीं ।

इसलिये अपूर्वकरण में अनुकृष्टि रचना नहीं होती है ।

विदियकरणादिसमयादंतिमसमओत्ति अवरवरसुद्धी ।  
अहिगदिणा खलु सव्वे, होंति अणंतेण गुणियकमा ॥52॥

• अन्वयार्थः- (विदियकरणादिसमयाद्) दूसरे करण के अर्थात् अपूर्वकरण के प्रथम समय से (अंतिमसमओत्ति) अंतिम समय पर्यन्त (अवरवर सुद्धी) जघन्य व उत्कृष्ट विशुद्धि (खलु) निश्चय से (अहिगदिणा) सर्प की चाल से (सव्वे) सब (अणंतेण गुणियकमा) अनन्तगुणित क्रम से (होंति) होती हैं ॥52॥

# परिणामों की विशुद्धि

अपूर्वकरण के प्रथम समय से अंतिम समय तक के परिणामों में  
जघन्य और उत्कृष्ट विशुद्धि अनंतगुणी है ।

प्रथम समय के जघन्य परिणाम से (1)

उसी समय के उत्कृष्ट परिणाम की विशुद्धि (456) अनंत गुणी है ।

उससे द्वितीय समय के जघन्य परिणाम की विशुद्धि (457) अनंत गुणी है ।

उससे उसी समय के उत्कृष्ट परिणाम की विशुद्धि (928) अनंत गुणी है ।

इस प्रकार प्रत्येक समय के परिणामों की विशुद्धि का क्रम जानना ।

जघन्य  
परिणाम

1

457

929

1417

1921

2441

2977

3529

अहिगति



उत्कृष्ट  
परिणाम

456

928

1416

1920

2440

2976

3528

4096

जघन्य से  
उत्कृष्ट विशुद्धि  
सर्प की चाल  
समान



# परिणामों की विशुद्धि का तारतम्य

प्रथम समय के जघन्य परिणाम से उसी समय का उत्कृष्ट परिणाम

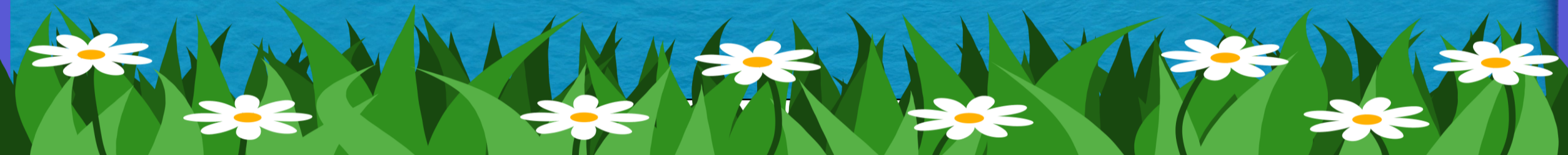
- अनंत गुणा विशुद्ध है । (जघन्य × अनंत)
- असंख्यात बार अनंत गुणा विशुद्ध है । {जघन्य × (अनंत)<sup>असंख्यात</sup>}
- असंख्यात लोक बार अनंत गुणा विशुद्ध है । {जघन्य × (अनंत)<sup>असंख्यातलोक</sup>}

हर समय के परिणामों में असंख्यात लोकप्रमाण षट्स्थान पाये जाते हैं । इसलिए जघन्य से उत्कृष्ट परिणाम में इतनी अधिक विशुद्धता है ।

प्रत्येक समय के उत्कृष्ट परिणाम से अगले समय का जघन्य परिणाम एक बार ही अनंत गुणा है क्योंकि नवीन षट्स्थान का आरंभ होता है ।

गुणसेढीगुणसंकम-ठिदिरसखंडा अपुव्वकरणादो ।  
गुणसंकमेण सम्मामिस्साणं पूरणो त्ति हवे ॥53॥

• अन्वयार्थः- (अपुव्वकरणादो) अपूर्वकरण से (गुणसंकमेण सम्मामिस्साणं पूरणो त्ति) गुणसंक्रमण द्वारा सम्यक्त्व और मिश्र के पूरण काल पर्यन्त (गुणसेढीगुणसंकमठिदिरसखंडा) गुणश्रेणि, गुणसंक्रमण, स्थितिकांडकघात और अनुभागकांडक घात (हवे) होते हैं ॥53॥



# अपूर्वकरण के आवश्यक

अपूर्वकरण के प्रथम समय से गुणसंक्रम द्वारा सम्यक्त्व, मिश्र के पूरण काल तक ये आवश्यक होते हैं-

1.  
गुणश्रेणी  
निर्जरा

2.  
गुणसंक्रमण

3.  
स्थितिकांडक  
घात

4.  
अनुभागकांडक  
घात

विशेष -

ये सब कार्य सत्ता में स्थित कर्मों में होते हैं।

गुणसंक्रमण सम्यक्त्व प्राप्ति के पश्चात् होता है। इस अपूर्वकरण में नहीं होता है।



# पूरण काल

X
X
X
X
X
X
X
X
0
0
0
0
0

प्रथमोपशम  
सम्यक्त्व का काल

मिथ्यात्व का गुण  
संक्रमण काल

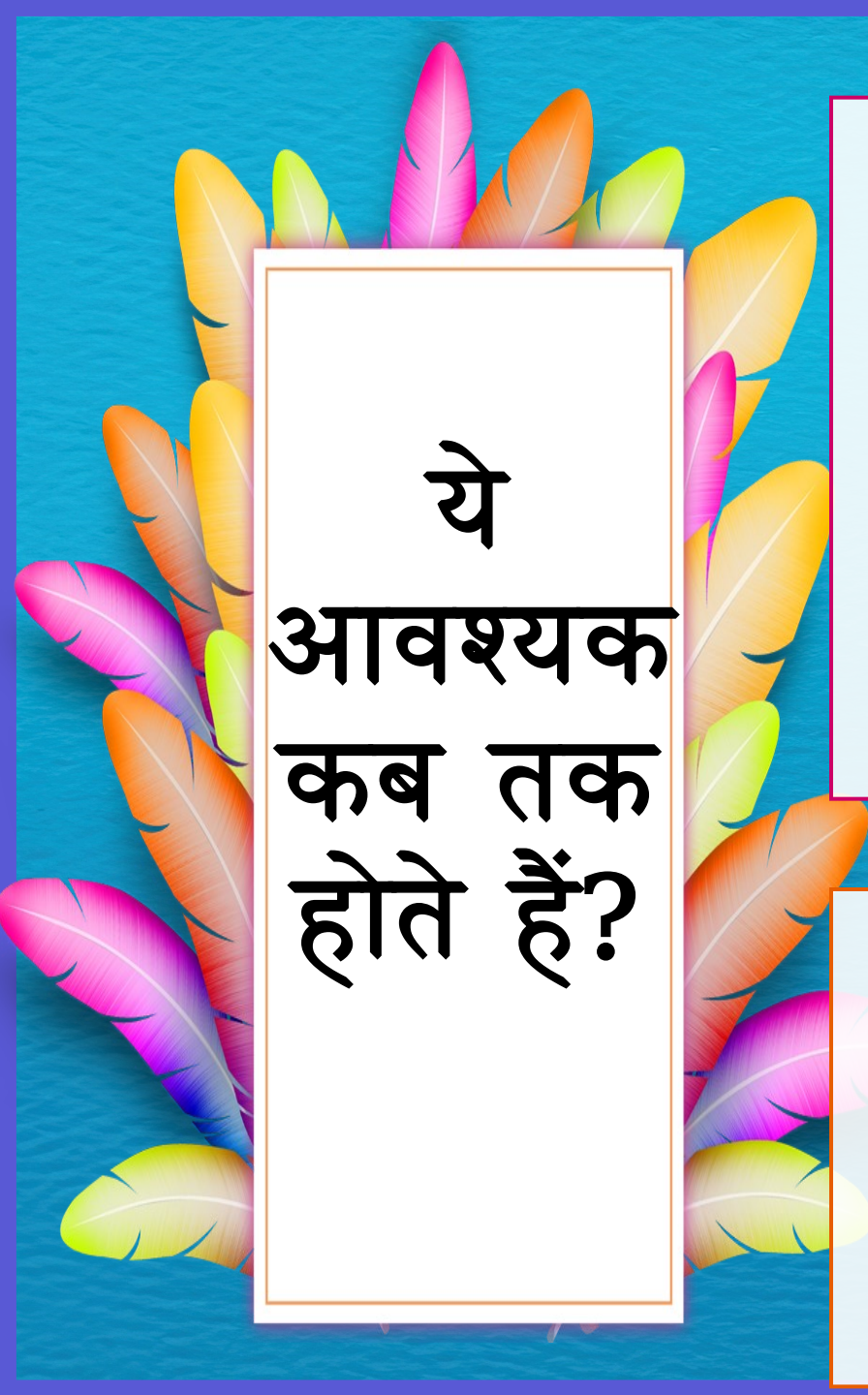
करण का काल

प्रथमोपशम सम्यक्त्व होने पर मिथ्यात्व प्रकृति का गुणसंक्रमण अंतर्मुहूर्त काल के लिए होता है।

इस गुण संक्रमण के काल को ही 'सम्यक्त्व और मिश्र प्रकृति का पूरण काल' कहते हैं।

इसमें सम्यक्त्व और मिश्र प्रकृति को पूरा जाता है, भरा जाता है। इसलिए यह पूरण काल है।

पूरण काल के पश्चात् विध्यात नामक संक्रमण होता है।



ये  
आवश्यक  
कब तक  
होते हैं?

### मिथ्यात्व कर्म:

- गुणश्रेणी निर्जरा अपूर्वकरण के प्रथम समय से अनिवृत्तिकरण में 2 आवली शेष रहने तक होती है ।
- स्थितिकांडकघात और अनुभागकांडक घात अपूर्वकरण के प्रथम समय से अनिवृत्तिकरण के अंत तक होते हैं ।
- गुणसंक्रमण; सम्यक्त्व प्राप्ति से लेकर पूरण काल तक होता है।

### शेष कर्म:

- गुणश्रेणी निर्जरा, स्थितिकांडकघात और अनुभागकांडक घात अपूर्वकरण के प्रथम समय से पूरणकाल के अंत तक होते हैं ।
- गुणसंक्रमण नहीं होता है।

ठिदिबंधोसरणं पुण, अधापवत्तादुपूरणो त्ति हवे ।  
ठिदिबंधट्टिदिखंडुक्कीरणकाला समा होंति ॥54॥

- अन्वयार्थ : (ठिदिबंधोसरणं) स्थितिबंधापसरण (अधापवत्तादुपूरणो त्ति) अधःप्रवृत्तकरण से लेकर सम्यक्त्व और मिश्र प्रकृति के पूरणकाल पर्यन्त (हवे) होता है ।
- (ठिदिबंधट्टिदिखंडुक्कीरणकाला) स्थितिबंधापसरण काल और स्थितिकांडकोत्कीरण काल (समा होंति) समान होते हैं ॥54॥



# स्थितिबंधापसरण

स्थितिबंधापसरण

अधःप्रवृत्तकरण के प्रथम समय से

गुणसंक्रमण द्वारा पूरण काल तक होता है ।

जितना काल स्थितिकांडक घात में लगता है, उतना ही काल स्थितिबंधापसरण में भी लगता है।

अर्थात् अपूर्वकरण आदि में इन दोनों को समान अंतर्मुहूर्त काल लगता है ।

प्रत्येक स्थितिकांडक घात एवं स्थितिबंधापसरण एक साथ प्रारंभ होते हैं और एक साथ समाप्त होते हैं ।

प्रश्न - स्थितिबंधापसरण तो प्रायोग्य लब्धि से ही प्रारंभ हो गया था।  
फिर अधःप्रवृत्तकरण के प्रथम समय से क्यों कह रहे हैं ?


उत्तर – यद्यपि प्रायोग्य लब्धि में भी स्थितिबंधापसरण होते हैं, परंतु वहाँ वे अवस्थित नहीं हैं, उनके वहाँ पूर्ण होने का नियम नहीं है ।

कदाचित् मरण हो जाए, तो वे नहीं भी हो । परंतु अधःप्रवृत्तकरण में तो स्थितिबंधापसरण अवस्थित है, उसका पूर्ण होना भी निश्चित है ।

इसलिए प्रधान होने से अधःप्रवृत्तकरण के प्रथम समय से ही स्थितिबंधापसरण विवक्षित है ।

गुणसेठीदीहत्तमपुव्वदुगादो दु साहियं होदि ।  
गलिदवसेसे उदयावलिबाहिरदो दु णिक्खेवो ॥55॥

- अन्वयार्थः- (गुणसेठीदीहत्तं) गुणश्रेणि का दीर्घत्व अर्थात् गुणश्रेणि का आयाम (अपुव्वदुगादो दु) अपूर्वद्विक अर्थात् अपूर्वकरण और अनिवृत्तिकरण काल से (साहियं) थोड़ा अधिक (होदि) होता है।
- (गलिदवसेसे) उस गलितावशेष गुणश्रेणि आयाम में (उदयावलिबाहिरदो दु) उदयावली के बाहर (णिक्खेवो) निक्षेप होता है अर्थात् अपकृष्ट द्रव्य देता है ॥55॥



# गुणश्रेणी निर्जरा

सत्ता में स्थित कर्मों की

प्रतिसमय

असंख्यात गुणाकार रूप से

निर्जरा होना

गुणश्रेणी निर्जरा कहलाता है ।

# गुणश्रेणी का उदाहरण

मानाकि

अपकृष्ट द्रव्य = 8500,

गुणश्रेणी आयाम = 4,

असंख्यात = 4

शलाका	निषेक द्रव्य
प्रथम निषेक की शलाका	1
द्वितीय निषेक की शलाका	$1 \times 4 = 4$
तृतीय निषेक की शलाका	$4 \times 4 = 16$
चतुर्थ निषेक की शलाका	$4 \times 16 = 64$
कुल शलाका	85



$$\frac{\text{अपकृष्ट द्रव्य}}{\text{कुल शलाका}} = \frac{8500}{85} = 100 \text{ गुणकार का प्रमाण}$$

इस गुणकार से प्रत्येक समय की शलाकाओं से गुणा करने पर प्रत्येक निषेक में देय द्रव्य आता है।

## गुणश्रेणी आयाम में देय- द्रव्य

गुणश्रेणी का द्रव्य	निषेक द्रव्य
प्रथम निषेक में दिया द्रव्य	$1 \times 100 = 100$
द्वितीय निषेक में दिया द्रव्य	$4 \times 100 = 400$
तृतीय निषेक में दिया द्रव्य	$16 \times 100 = 1600$
चतुर्थ निषेक में दिया द्रव्य	$64 \times 100 = 6400$
कुल द्रव्य	8500



# गुणश्रेणि निक्षेप

प्रथम निषेक से दूसरे निषेक में,

दूसरे निषेक से तीसरे निषेक में

इस प्रकार गुणश्रेणि-निर्जरा का जितना आयाम है,

उसके प्रत्येक निषेक में निर्जरा के लिये

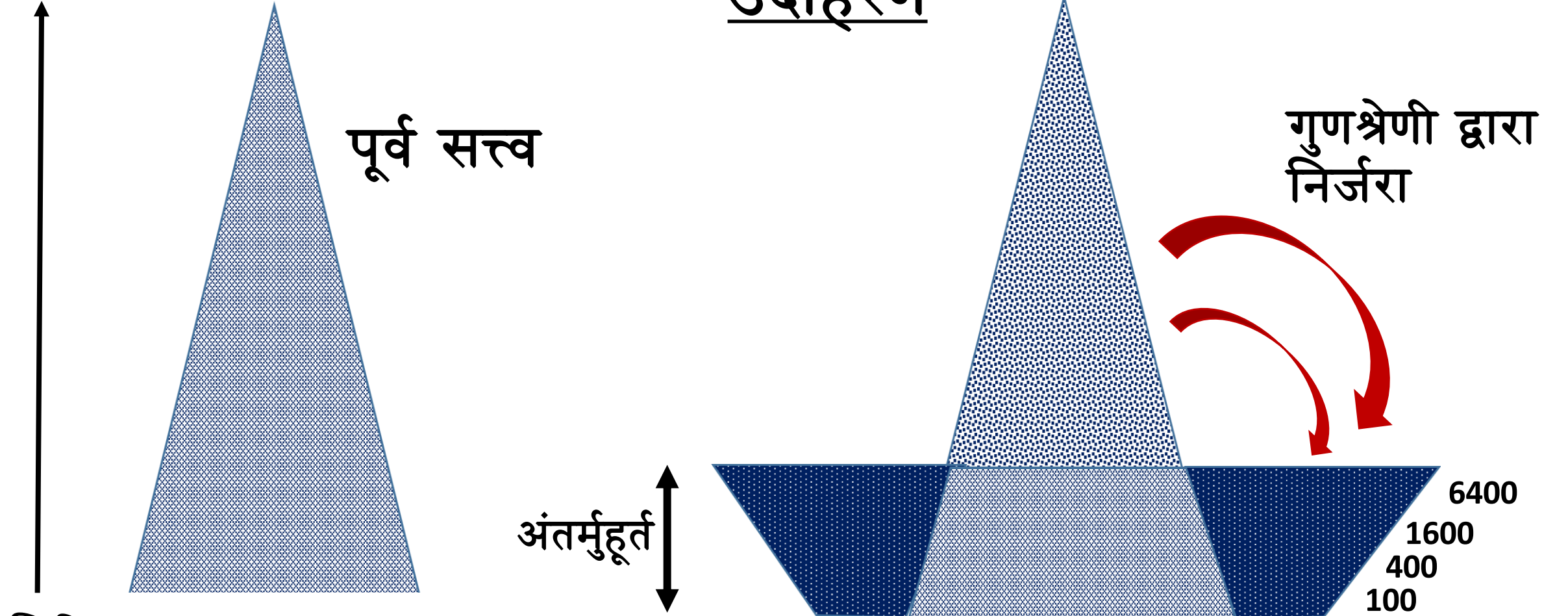
उत्तरोत्तर असंख्यात गुणा

अपकर्षित द्रव्य का देना

गुणश्रेणि निक्षेप कहलाता है ।

# गुणश्रेणी निर्जरा

## उदाहरण



# गुणश्रेणी निर्जरा

गलितावशेष

अवस्थित

उदयादि

उदयावली  
बाह्य

उदयादि

उदयावली  
बाह्य

# गलितावशेष गुणश्रेणी

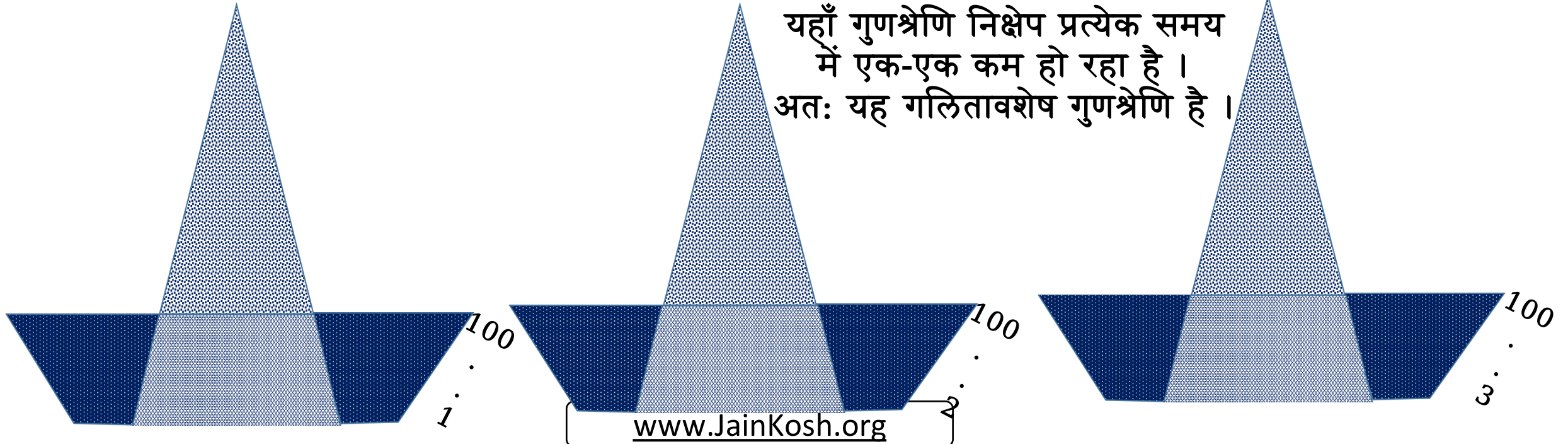
जिसमें अधस्तन एक-एक निषेक के

गलित होते जाने के कारण

उत्तरोत्तर गुणश्रेणि-निक्षेप में

एक-एक समय कम होता जाता है,

उसे गलितावशेष गुणश्रेणि-निक्षेप कहते हैं ।



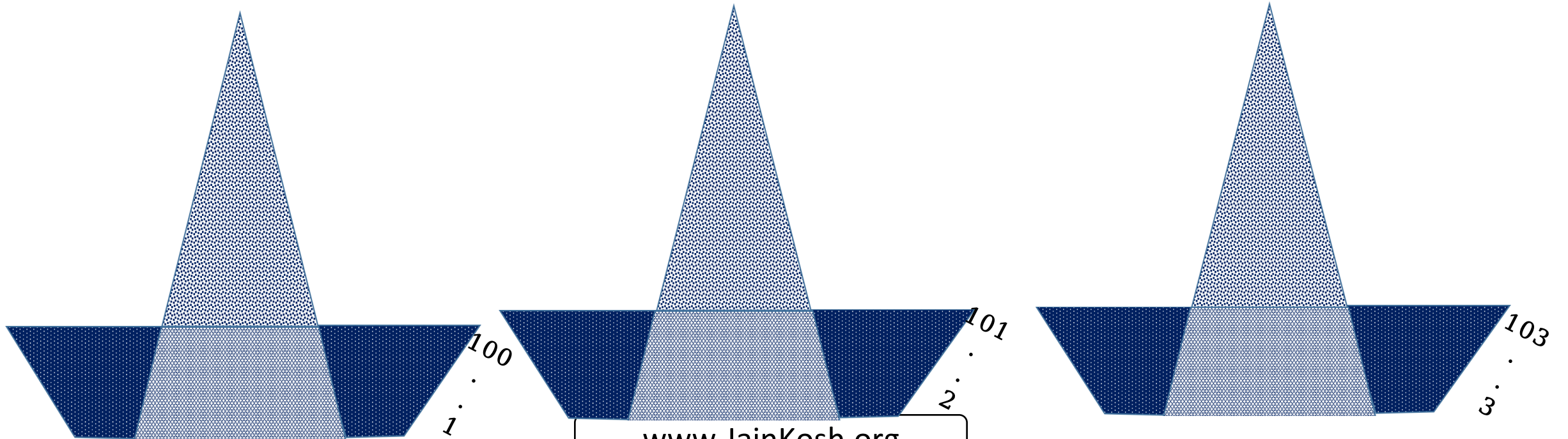
# अवस्थित गुणश्रेणी

जिसमें अधस्तन एक-एक निषेक के

गलित होने पर गुणश्रेणी आयाम में

ऊपर एक-एक निषेक की वृद्धि होती जाती है

उसे अवस्थित गुणश्रेणी कहते हैं।



# अवस्थित गुणश्रेणी

यहाँ प्रत्येक समय में अधस्तन एक निषेक के गल जाने पर उपरितन स्थिति का एक निषेक गुणश्रेणि आयाम में शामिल हो गया ।

इससे अगले समय में भी गुणश्रेणि का आयाम 100 ही रहा ।

ऐसे प्रत्येक समय में एक-एक निषेक गुणश्रेणी से गल रहा है तथा उपरितन निषेक गुणश्रेणि में मिल रहा है ।

इसलिए गुणश्रेणी का आयाम अवस्थित है ।

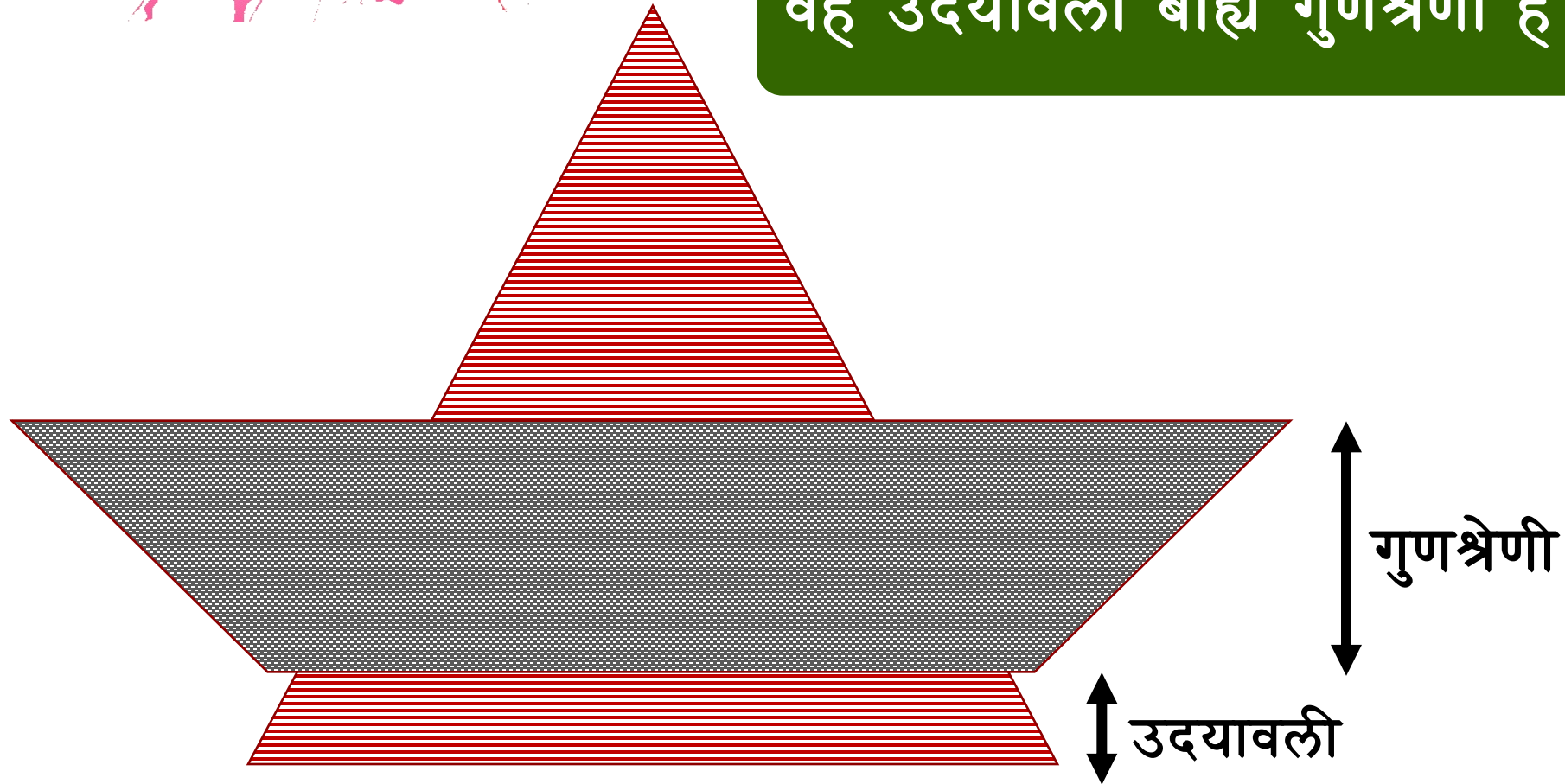
इसलिए इसे अवस्थित गुणश्रेणी कहते हैं ।

# उदयावली-बाह्य गुणश्रेणी

जहाँ गुणश्रेणी का निक्षेप

उदयावली के अनंतर निषेक से किया जाता है,

वह उदयावली बाह्य गुणश्रेणी है ।



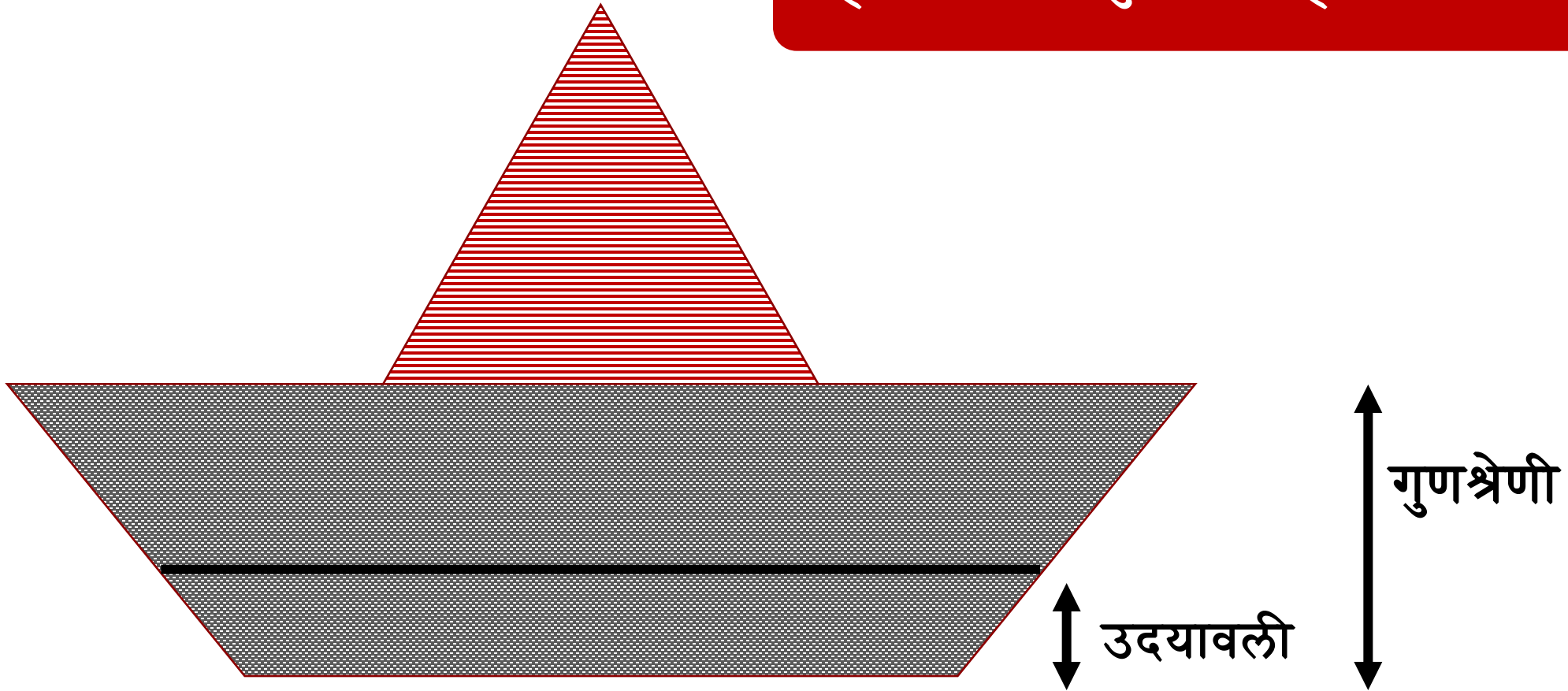


# उदयादि गुणश्रेणी

जहाँ गुणश्रेणी का निक्षेप

उदयावली के प्रथम समय से किया जाता है

वह उदयादि गुणश्रेणी है ।



# गुणश्रेणी के नियम

- 1) उदयवाली प्रकृति की ही उदयादि गुणश्रेणी संभव है ।
- 2) जिस प्रकृति का उदय नहीं है, उसकी 'उदयावली-बाह्य' गुणश्रेणी ही होती है ।
- 3) उदयवाली प्रकृति की दोनों प्रकार की गुणश्रेणी संभव है ।
- 4) आयुकर्म की कभी भी गुणश्रेणी निर्जरा नहीं होती है ।
- 5) शेष सभी पुण्य-पाप रूप प्रकृतियों की गुणश्रेणी निर्जरा होती है ।
- 6) इससे कर्म का स्थिति-सत्त्व नहीं घटता है ।



## गुणश्रेणी निर्जरा

यहाँ गुणश्रेणी का आयाम (अपूर्वकरण + अनिवृत्तिकरण + कुछ अधिक) जितना है।

कुछ अधिक का प्रमाण  $\frac{\text{अनिवृत्तिकरण}}{\text{संख्यात}}$  है ।

यहाँ उदयावली-बाह्य गलितावशेष गुणश्रेणि होती है ।

➤ Reference : श्री लब्धिसार टीकासहित अनुवाद – ब्र. सुजाता रोटे,  
बाहुबली (वर्तमान में आर्यिका श्री शुद्धोहंश्री माताजी)

➤ For updates / feedback / suggestions, please contact

➤ Sarika Jain, [sarikam.j@gmail.com](mailto:sarikam.j@gmail.com)

➤ [www.jainkosh.org](http://www.jainkosh.org)

➤ ☎: 94066-82889

• इसी विषय के विडियो लेक्चर हमारे चैनल पर उपलब्ध हैं । आप  
अवश्य लाभ लें । [www.Jainkosh.org/wiki/Videos](http://www.Jainkosh.org/wiki/Videos) पेज पर जाएँ  
एवं लब्धिसार की प्लेलिस्ट चुनें ।